देवर्षि नारद

भागवत दर्शन

भागवती कथा महिमा (१)

व्यास शास्त्रोपवनतः सुमनांसि विचिन्विता ।
कृतं वै प्रभुदत्तेन भागवतार्थ सुदर्शनम् ॥

लेखक

श्री प्रभुदत्त ब्रह्मचारी

寄贈 昭和46年度科学研究費購入図書 東外大・東洋文化研 合同海外学術調査団 氏

東京外国語大学 157683 47.3.31 図書館

प्रकाशक

सङ्कीर्तन भवन

प्रतिष्ठानपुर, झूसी (प्रयाग)

मुद्रक

भागवत प्रेस, प्रतिष्ठानपुर, झूसी (प्रयाग)

प्रथम संस्करण } माघ, संवत् २०१२ वि० { संशोधित मूल्य १, ६२ मूल्य १।) सवा रुपया

विषय सूची

अध्याय		पृष्ठ संख्या
भूमिका-भागवत दर्शन	...	१
१—श्री भागवता कथा महिमा—वन्दना	...	२०
२—श्रीभागवत—कथा—अमृत	...	२८
३—श्री नारदजी की भक्ति से भेंट	...	४३
४—श्री नारदजी द्वारा भक्ति को कलिप्रभाव जताना		६१
५—श्री नारदजा द्वारा भक्ति की महिमा	...	७५
६—ज्ञान वैराग्य को जागृत करने का नारदजा का प्रयास		८७
७—भागवती कथा ही सर्वोपयोगा सुगम साधन है		९९
८—श्रीमद्भागवत कथा समारोह	...	११५
९—श्रीमद्भागवत—महिमा	...	१२४
१०—श्रीनारदजी के ज्ञान यज्ञ में भक्ति का प्रादुर्भाव		१४३
११—श्री नारदादि भक्तों के मध्य भगवान् का प्राकट्य		१५३
१२—धुन्धुली पति आत्मदेव की कथा	...	१६०
१३—धुन्धुकारी और गोकर्ण का जन्म	...	१७५
१४—धुन्धुकारी के कुकृत्यों से आत्मदेव का गृह त्याग		१९५
१५—धुन्धुकारी का दुखद अन्त और प्रेत योनि की प्राप्ति		२१०
१६—धुन्धुकारी प्रेत पर गोकर्ण की कृपा	...	२२२

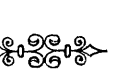

॥श्री हरिः॥

प्रकाशकीय वक्तव्य

आज चिरकाल के पश्चात् हम पाठक पाठिकाओं की सेवा में समुपस्थित हो रहे हैं। हमने पहिले ही निवेदन किया था कि भागवत दर्शन का पहिले कथा भाग लिखा जायगा तदनन्तर दर्शन भाग। परम पिता परमात्मा की कृपा से ६० भागों में कथा भाग अर्थात् भागवती कथा समाप्त हो गयी। अब ६१ वें खंड से दर्शन भाग चलेगा। हिन्दु सनातन वैदिक आर्य धर्म की सभी बातों का इसमें समावेश हो जाय ऐसी चेष्टा हम लोगों की है, होगा तो वही जो भगवान् करावेंगे।

(१) कुछ लोगों के पत्र आये हैं, कि पूरी भागवत तो ६० खण्डों में समाप्त ही हो गयी, अब आगे क्या लिखेंगे? आगे अब भागवत के सम्बन्धित अन्य विषय लिखे जायँगे। हिन्दु धर्म का श्रीमद् भागवत ही एक सर्वाङ्ग पूर्ण, सर्व श्रेष्ठ सरस सुखद ग्रंथ है सम्पूर्ण, वेद, इतिहास, पुराण तथा अन्य सभी शास्त्रों का सार सार लेकर शुकदेव जी ने राजा परीक्षित् को सुनाया था। आगे के खण्डों में इन्हीं बातों पर विचार किया जायगा। जैसे ६१-६२ दो खण्डों में पद्मपुराण और स्कन्ध पुराण में वर्णित भागवत महिमा का वर्णन है, फिर कई खंडों में भागवती स्तुतियाँ हैं। कथा कहते समय स्तुतियों को छोड़ते गये थे और यह आश्वासन सूतजी देते गये थे, कि समस्त स्तुतियों को स्तुति प्रकरण में फिर सुनावेंगे। कथा भाग में तो श्रीकृष्ण की उन्हीं लीलाओं का वर्णन है जो भागवत तथा अन्य पुराणों में वर्णित हैं। व्रज के रसिकों ने स्वयं उपासना करके अन्य बहुत सी सरस लीलाओं का साक्षात्-कार किया है, व्रज भाषा के सरस साहित्य ने एक दूसरी ही रसमयी गंगा की धार बहायी है, उनका भी बीज तो भागवत में ही है। अतः स्तुतियों के पश्चात् राधा कृष्ण की सरस